कुछ न कीजिए और खूब कमाईए

दवाई की जानकारी निचे दी है, मगर बिमारी क्यों होती है? ९०० प्रतिशत नफा कैसे मिलेगा? वह जानकारी पहले पढिए, घर के आंगन या छत पर उसीका पूरा फायदा लें और बाद में बिमारी से छुटकारा पाने के लिए औषधी की जानकारी पढे।

'कल्पवृक्ष फार्म' के १५ एकड़ भूमि में स्व. श्री. भास्कर हिराजी सावेजी पहले आधुनिक कृषि-पद्धति से खेती करते थे, मगर सन १९५७ की साल में उसी कार्य-पद्धति से भारी नुकसान उठाना पड़ा। तीन साल में सावेजी को आधुनिक कृषि के सारे बुरे पहेलुं समझ में आ गये। उन्होंने जाना कि, उनकी जमीन कमजोर न थी, मगर आधुनिक कृषि की मायाजाल और उसीके साथ जुड़ी कार्य-पद्धति नुकसानी का मुख्य कारण था। लोग खाब्ब में भी नहीं सोचते कि, जुताई, रासायनिक खाद, जहरिली दवाईयाँ और निराई (खरपतवार) के बिना भी कृषि करना संभव है, इसीलिए सन १९६० में सावेजी ने जैविक कृषी के प्रयोग करके खोजा और यह जाना कि, कृषि के सारे काम तो 'भ ग वा न' के चक्रो द्वारा मुफ्त में होते हैं !!

'भ ग वा न' के बनाअे चक्रो की मदद लेते हुए सन १९६० की साल में सावेजी ने एक छोटासा प्रयोग जैविक कृषि का किया था। उस प्रयोग में सावेजी के खेतों का उत्पादन घटकर ५० प्रतिशत हो गया, फिर भी मुनाफा काफी हुआ !! वह कैसे? रसायणों से भरपूर आधुनिक कृषि में सावेजी को रु.१००/- की कमाई के लिए रु.८०/- का खर्च होता था और कबी कबात मिला तो सिर्फ रु.२०/- का मुनाफा, जबकि नये प्रयोग में कमाई हुई सिर्फ रु.५०/- मगर सावेजी ने पानी सिंचन के अलावा कुछ नहीं किया इसलिए खर्च हुआ सिर्फ रु.१०/- का, इस प्रकार सावेजी को रु.४०/- का मुनाफा हुआ। सिर्फ इतना ही नहीं सावेजी को निरोगी उपज भी मिली। इस प्रयोग के बाद अनपढ़ मनुष्य भी समझ जाता है कि, उसे सिर्फ ज्यादा उपज जरुरी है या शुद्ध उपज की? साथ ही साथ मुनाफा जरुरी है या आधुनिक कृषी मे बेहद खर्च करके बेवकुफ बनानेवाला सिर्फ झहरीला उत्पादन चाहिए? प्रयोग के बाद अब पिछले ५५ साल से सावेजी का परिवार आधुनिक कृषि की मदद बिना ही, सब से अधिक उत्पादन प्राप्त करनेवाले भारत के प्रथम किसान बने है।

'श्री सावेजी की जैविक कृषि-पद्धति' का अनुभव और ज्ञान आज खेती काम के लिए एक बडा वरदान है, क्योंकि जैविक कृषि की उपज़ में **शरीर को लगनेवाले सारे के सारे १२ पोषक तत्व मौजुद है।** उसीसे ही निरोगी जीवन मिलता है, पर्यावरण की रक्षा होती है, बिना खर्च पशुधन को घरमें रख शकते हैं और सबसे बड़ा फायदा, किसान को कम से कम पानी, लागत, महेनत और कृषि के ज्ञान बिना ही शुद्ध और अधिक उपज़ के साथ भारी मुनाफा मिलता है। सावेजी को यह सफलता कई सालों के प्रयोग और बाद मिली है, इसलिए सावेजी बारबार दोहराते थे कि, **'मेरे खेत ही मेरे लिए स्कुल, कॉलेज और विद्यापीठ हैं।'** जहाँ मुझे काम करने से सच्चा ज्ञान प्राप्त हुआथा। अनुभव आने के बाद सावेजी कहेते है कि, **'कुछ न कीजिए और जैविक कृषि के द्वारा खूब कमाईए करें।'** आपभी जैविक कृषि की बांते समझकर घर के आंगन या मकान की छतपर, घर में रोज उपयोग होनेवाली निरोगी सबजी उगा शकते हो और मुनाफा भी कमा शकते हो।

सावेजी ने किसान समाज की भलाई के लिए किसी भी लालच और अपेक्षा बिना, खुद की खोज के सारे राज लोगों के चरणों में समर्पित किये हैं। **'बिना आचरण उपदेश व्यर्थ है।'** यह बात ध्यान में रखते हुए सावेजी बताते थे कि, 'किसान किसी भी कार्य-पद्धति से खेती करे, सभी खेती-पद्धति मुख्यत: पाँच नियमों पर ही काम करती हैं। वह बातें संक्षेप में निचे पढें।

१) जुताई : 'भगवान' की फौज जीस में कीड़े-मकोडे, जीव-जन्तु, मुख्यरुप से केंचुएं जैसे जीवात्मा खुद की जीनेकी कार्य-पद्धति द्वारा जमीन में सुरंग जैसे छोटे-छोटे छेद करते है, इसीसे जडो को जरूरी हवा-पानी का आना-जाना संभव होता है। साथ

ही वहीं जीवात्मा के मल द्वारा मिट्टी उपजाऊ बनती है, इसी कारण **'किसान के सच्चे मित्र केंचुएं'** को कहा जाता है जबकी आधुनिक कृषि के ट्रेक्टर तो तेल (डिझल) खाकर मिट्टी और पर्यावरण दोनों को हानी करता है।

२) खाद : जमीन की उपजाऊ शक्ति को बढ़ा ने के लिए सुखे पत्ते, गोबर, घर से निकला हुआ सब्जी का कचरा आदि.... उसीका ही उपयोग खेतों में होता है। यह सेन्द्रिय पदार्थ पेड-पौधों या जमीन के लिए खाद नहीं मगर जमीन के अंदर रहनेवाले जीवात्मा का अन्न है, वह इसे खाकर मल द्वारा पेड-पौधों के लिए खाद बनाकर देते है। जब कुदरत की संर्पूण फौज से खाद मुफ्त में मिलता हो, तो फिर **ज़हरीले रासायनिक खाद खरीदने की बेवकुफी हम क्युं करें?**

३) पानी : ज्यादा करके किसान थाले के पास बेहद सिंचन करके जड़ों का गला ही दबा देते हैं और इसी अधीक पानी के उपयोग के कारण, पानी अनेक फीट की गहराई में गया है। जबकि जैविक कृषि में 'पेड और नाली' और 'क्रोटन पौधा' के उपयोग द्वारा तो सिंचन पेड़ से १२ से १५ फीट की दूरी से होता है, इसी से ८० प्रतिशत पानी की बचत होती है। इस कार्य-पद्धति के कारण कुआं और बोरवेल के पानी भंडार में वृद्धि होती है। क्योंकि **खेतो में पेड-पौधों को पानी नही सिर्फ नमी जरुरी है।**

४) फसल की रक्षा : जरुरत होने पर ही जीवजन्तुं को फसल से दूर रखने के लिए गौमुत्र, नीम, तुलशी और कई वनस्पति से तैयार किया हुआ घोल का उपयोग करें। वैसे भी कुदरत के कई जीव-जन्तुं, पशु-पंछी खुद को दिये हुए फसल रक्षा के काम बखुबी से करते हैं। इसी के साथ एक आध्यात्मिक बात के उपर भी ध्यान दे कि 'हम सब मनुष्य इस संसार में एक रक्षक के रुप में खाली हाथ आये हैं और खाली हाथ लौटना है, इसलिए सुख और शान्ति से **'जियो और दुसरों को भी जिने दो।'** संसार के रचईता ब्रह्मा, विष्णू और महेश प्रभुजी जब खुद के कुदरती चक्र को बराबर चला रहे हैं, तो फिर ज़हरीली दवाईयों का छिड़काव करके, निर्दोष जीव-जन्तु की हत्या करके पाप की गठ्ठरी हम क्यों बांधे? 'भगवान' के कामो मे हस्तक्षेप करना, निर्दोष जिवों के प्राण हरना और बिना सोचे किऐ हुए सारे पापो के कारण, किसी न किसी प्रकार जीवन मे दु:ख जरुर आते है।

५) खरपतवार: लगातर उगने वाले घास को किसान सरदर्द और दुश्मन समझते है। मगर सच तो यह है कि, **'घास तो कुदरत का एक बड़ा वरदान है।'** घास धरती माता के लिए 'कपडा' और पेड-पौधों की ज़डों द्वारा सुरक्षीत रखे हुए भंडार को, सूर्य की तेज किरणों से बचाने का काम करते हैं। कुदरत के इस वरदान को कभी उखाड कर फेंकना नहीं, जरुरत होनेपर घास काटकर पशुधन को खाने दिजीए। इसी से गोबर, फसल रक्षा और मनुष्य की बिमारी दुर करनेवाली दवाईयाँ, दूध और ट्रान्सपोर्ट में काम आनेवाले बैल प्राप्त होंगे। इतना सब पशुधन से मुफ्त मिलता है फिरभी, आज पशुधन को कसाई के हाथो काटने के लिए लाईन में क्युं खडा किया है ? अब हमारी मुर्खता देखो, जब **पशु खुद ही धन** है और उसी को बच्चाने हम धन देते हैं !! वाह भारत के लोगो वाह, बहुती सुंदर प्रगती हो रही है और उपर से इसे धर्म का कार्य कहेते हो।

सावेजी तो गांधीबापु के भक्त थे और बापु की तरह ही एक समाज और विश्वबंधुत्व की भावना रखते थें। सावेजी ने खुद के आर्थिक बल से, जीतना हो सके उतना प्रचार किया था। लोग फार्म की मुलाकात के लिए जरुर आते हैं और बिना खर्च-महेनत से मिलती हुई उपज को देखकर दंग रह जाते हैं, मगर अफसोस यह है कि, आधुनिक कृषि को छोडकर जैविक कृषि को अपनाने से घभराते है। क्योंकि आज का किसान पूरी तरह से आधुनिक कृषि की मायाजाल में फंस चुका है और सावकार और बैंक के कर्जो में सम्पूर्णत: डूब चुका है, इसलिए वह ड़र रहे हैं की आधुनिक कृषि छोडने से मुशिबतें बढ गई तों? इसीलिए जैविक कृषि की बातें नही सोचते। जब आधुनिक कृषी में पूरी तरह डूब जाते हैं तब आत्महत्या करके जीवन समाप्त करतें है।

यह बात हम सभी समझते है कि, 'निरोगी जीवन के लिए निरोगी आहार जरुरी है।' मगर आज ज़हरीली, खाद और दवा के छिड़काव के कारण सभी खेतो की उपज जहरीली, कम पोषकवाली और बिना स्वाद की तैयार होती है, जिसे खाने से मानव रोगीष्ट होता है। अब रोग, बीमारी, अशक्ति और विलायती दवा के सहारे हम कबतक और कितने दिनों तक जीवित रहेंगे?

मै अशोक संघवी-मुंबई मे रहनेवाला २१ वर्ष की आयुमें ही बाजारमे मिलनेवाले ज़हरीले खुराक का शिकार हुआ। पूरे विश्व में जीस रोग का इलाज संभव नही वैसे जोड़ों का दर्द-वात-रुमेटज़्मि की बीमारी मुझे और मेरे माताजी को हुई। तब मे कुदरती इलाज और शुध्ध आहार पाने के लिए, एक व्यापारी होते हुए भी कृषि का मार्ग अपनाया। मगर मुझे तो खेती के बारे में अ,ब,क, तक की जानकारी न थी ! जानकारी पाने के लिए मे 'कल्पवृक्ष फार्म' पर सावेजी से मुलाकात की और जैविक कृषि देखकर भारी प्रभावित हुआ। तब मैने 'संघवी फार्म' की २४ एकड़ बंजर भूमिपर, 'श्री सावे जैविक कृषि पद्धति' की शुरुआत सन १९८७ में की। पत्थरोंवाली बंजर जमीन, जहाँ घास का तीनका तक नहीं निकलता, वहाँ कम खर्च, पानी और महेनत से सिर्फ चार महिनों में ही निरोगी सब्जी की उपज, जैविक कृषि पद्धति के ठोस सबुत और बहुत बड़ा मुनाफा मुझे मिला। साथीसाथ मेरी सारी बिमारी छुमंतर हुई। सावे पद्धति को बखुबी से सिद्ध करने वाले थे, सावेजी के पूत्र **श्री नरेश और सुरेश सावे**। इस सफलता से, बिना खर्च और सिर्फ पानीसे अधिक उत्पादन करने वाले किसान होने के कारण **लिमका बुक ओफ रेकोर्ड** में स्थान मिला। जैविक कृषि की महत्वता समझने और समाज के लाभ के लिए हमने श्री सावे पद्धति के प्रचार का काम शुरु किये।

सावेजी की जैविक कृषि कार्य-पद्धति से मुझे खेती का ज्ञान प्राप्त हुआ और उसीसे मैने जाना कि 'पर्यावरण की रक्षा, सभी के निरोगी जीवन के लिए और समृद्धि पाने का यह सिर्फ एक ही मार्ग है और समाज को हरहाल में इसकि जानकारी मिलनी ही चाहिए।' किसानों की आत्महत्या रोकने और पर्यावरण की रक्षा करने का अनुष्ठान पूर्ण करने की भावना रखते हुए, मैने जीवन में प्रथम किताब लिखी। इस किताब में ९०० प्रतिशत मुनाफा और सभी नई-पुरानी बीमारी बिना खर्च से छुटकारा पाने की जानकारी मैने दी है। **'देखो और फिर विश्वास करो।'** इस कार्य के लिए हमने हर शनिवार को फार्मपर लोंगो को आनेका आमंत्रण दिया है। देश-विदेश की संस्था और लोगों को जैविक कृषि के वौज्ञनानिक ठोस सबुत, भरपूर उपज और मिलनेवाले मुनाफे की जानकारी दिखाकर, हम कई सालों से समाज को अपना योगदान दे रहे हैं। सावेजी के संशोधण के लीए हमे देश-विदेश के कई पुरष्कार भी मिले है, वह जानकारी इस वेबसाईड की Achievements विभागमें पढीऐ।

आज आमदनी से अधिक तो खर्च है, इसीलिए कृषि प्रधान देश के लोगो ने खेती छोड़कर नौकरी का दामन पकडा है। किसानो ने ज्यादा उपज की लालच में और कई लोगो ने घरकी जरुरतो को पूरा करने, बैंक से लोन या क्रेडीट कार्ड लिए है। जब लोग कर्ज में डूब जाते है, तब छूटकारा पाने के लिए गधे के समान दिनरात काम करके, बीमारी के शिकार होते हैं। फिरसे निरोगी जीवन की चाहत में डॉक्टर और आधुनिक दवाईयाँ के चुंगल में फसतें है और फिर धन के साथसाथ शरीर के कई महत्व पूर्जे कटवाकर जीवनभर दुखी रहते हैं। इस प्रकार की कठीन परिस्थिति से बचने हेतु, कल्पवृक्ष फार्मपर 'जैविक और कुदरती कृषि का प्रशिक्षण केन्द्र हमने शुरु किया है। एक साथ २० लोगो कों फार्म पर जैविक कृषि के ठोस सबुत, निरोगी जीवन पाने का तरीका, खराब की हुई जमीन बीना खर्च उपजाऊ बनाने की सारी जानकारी देनेके साथ भरपूर कमाईए का मार्गदर्शन भी देतें हैं। अगर आप यह प्रशिक्षण केन्द्र में हिसा लेना चाहते हो तो इस वेबसाईड में रखा Training Classes का फोंम को भर कर अपना नाम दर्ज कराले। जैविक कृषीसे फायदा कैसे लेना यह जानकारी आपने पा ली है, अब कोई भी बिमारी १५ दिनोमे ठीक कैसे करनी है? वह हमारे अनुभव संक्षेप मे बता रहा हुँ।

कोईभी रोग सिर्फ १२ दवाई से ठीक होते है। क्युंकि **'भगवान'** ने मानव शरीर सिर्फ १२ क्षार- दवाई से बनाया है इसीलिए शरीर में एक क्षार कम या बढ गऐ की उसे हम रोग कहेतें हैं। यही १२ दवाई लेना क्युं जरुरी है? वह जानना चाहते हो तो इस वेबसाईड का Organic Medicines का विभाग पढीऐ।

१२ क्षा२ के नाम निचे है, यहं किसीभी होम्योपेथी दवाईं की दुकान से मिल जाएगी। यह १२ दवाई सिर्फ 6X पावर की लेनी है। दवाई के आगे मैने अपने नंबर लिखे हैं, वह सारे नंबर बोटल पर लिखकर रखें, जिससे दवाई पहेचानने में आशानी हो।

1) कल्केरीआ फ्लोर (Calcarea Fluor - 6X)
2) कल्केरीआ फोस (Calcarea Phos - 6X)
3) कल्केरीआ सल्फ (Calacrea Sulph - 6X)
4) फेरम फोस (Ferrum Phos - 6X)
5) काली मुर (Kali Mur - 6X)
6) काली फोस (Kali Phos - 6X)
7) काली सल्फ (Kali Sulph - 6X)
8) मेग्नशिया फोस (Magnesia Phos - 6X)
9) नेट्रम मुर (Naturm Mur - 6X)
10) नेट्रम फोस (Naturm Phos - 6X)
11) नेट्रम सल्फ (Naturm Sulph - 6X)
12) सिलिशिया (Silica - 6X)

श्रीमान / श्रीमती,
प्रभुजी का प्रसाद (दवाई) श्रद्धापूर्वक, धैर्य और १५ दिनों तक परहेज करते हुए लिजिए। मै पिछले ४० सालसे इस बायोकेमिक दवाई का उपयोग कर रहा हुँ और डोक्टर न होने के बावजुद मेरे अनुभव से मेरे परिवार और समाज के अन्य कई लोगोंके रोग मैंने मुफ्तमे ठीक किए है क्योंकि, **इस दवाई की शरीर पर कोई बुरी असर नहीं होती**, असल में जर्मन डोक्टर ने यह दवाई २०० साल पहले खोजी थी, यह दवाई दुध के पावडर से बनी मिठी गोली है, उसे चुस चुस कर और मुंहमें गलाकर खानी है।
परहेज : सबसे जरुरी बात अगर आप अपने शरीर को कचरा भरने का डिब्बा समझ कर कोल्ड्रींक, सिगरेट, शराब, गुटखा, तम्बाकू खातें हों तो सायद 'भगवान' भी आपकी मददत नहीं कर शकतें। यह 'भगवान' की एक प्रसादी है, इसलीए इसी का उपयोग करते समय मांस, मच्छी, अंडे, कॉफी, लहसुन, प्याज, मिठाई, ब्रेड, मक्खन, चीज, क्रीम, मैदा, बिस्कूट, चॉकलेट, आचार, ज्यादा तिखा, कची या तली हुई मिरची, खटाई डालकर बनाये हुए खाद्य पदार्थ, इमली, ठंडा पानी, आइस्क्रीम, कोल्ड्रींक, सिगरेट, शराब, गुटखा, तम्बाकू, तला हुआ और जो स्वाद में खट्टा हो वह १५ दिनों तक तो बिलकूल न खाएं । यह परहेज आपके शरीर को शुध्ध करने के लीए जरूरी है तभी तो आपको बिमारी से छुटकारा मिलेगा। बडों के लीए ३ गोली और १० साल से छोटे बचे के लीए १ गोली लेनी उचीत है।

दिन में तिनबार **सुबह, दोपहर और रात** भोजन के १५ मिनट पहले दवाई नंबर **4/5/10** की गोली का रस चूसकर ले, १५ मिनट के बाद ही पानी और भोजन ले। उसी प्रकार दिन में तिनबार **सुबह, दोपहर और रात** भोजन के ३० मिनिट बाद दवाई नंबर **2/6/8** की गोली ले।

सुचना : अगर आप अन्य कोई विलायती दवाईयां लंबे समय से उपयोग कर रहें हो, तो उसे फौरन बंध मत किजीए। क्योंकि, विदेशी खुद की लिखी किताबों को पढाकर डोक्टर तैयार करतें हैं और उन्ही के द्वारा हमारे शरीर को झहरीली दवाई की आदत डालते है। विलायती दवाई के साथ १५ से ३० मिनिट का अंतर रखकर यह दवाई ले शकतें हैं। १५ दिनो में जरा सा भी

फायदा दिखाई पडे उसी के बाद, धिरेधिरे खुद ही खुद के डोक्टर बन कर विलायती दवाई धीरेधीरे १ /२/ ३ दिनों का अंतर रखकर छोड दे तभी तो संपूर्ण बिमारी से छुटकार और निरोगी जिवन मिलेगा।

एक जरुरी सुचना मैंने जो नंबर और परहेज बताए है अगर १५ दिनो मे बिलकुल ही आराम न हो तो ही यह १२ दवाई का उपयोग कोन कोन सी बिमारी के लिए उपयोगी है ? वह जानकारी के लिए मेरी किताब पढे। किताब के लिए इस वेबसाईड के **BOOK INFORMATION** विभाग को देखें।

आपका विश्वाष पैदा करने के लीए मैं सिर्फ यही कंहुंगा कि, कोईभी बिमारी एक रात मे आती नही और एक रातमे उसीसे छुटकारा मिलता भी नही, इसलीए धिरज रखना बहुती जरुरी है और अगर विलायती दवाई वाकईमे शरीर को उपयोगी होती तो बिमारी कुच्छ दिनोमें तो ठीक होनी चाहिऐ मगर, वही विलायती दवाई की पढाई करनेवाले डोक्टर हमें दवा और मात्रा बढाकर जिवन भर झहरीली दवाई खाने की सुचना देते हैं और हमे लुटते हैं। वही दवाई खिलानेवाले बडेवडे कई डोक्टरों को मैंने वही झहरीली दवाई खाने के बाद घुटघुट कर मरते देखा है और कई अैसे डोक्टर भी है जो मेरे से दवाईं मुफ्त लेकर खातें भी है। यह भी जान लीजिए कि, बिमारी ठीक होने के बाद जरुर न हो तो यह १२ दचाई भी बंध कर दे और सिर्फ जैविक शुध्ध भोजन लिजीए और जरुर होने पर यही दवाई फिरसे शुरु कर शकते हैं, कारण एक ही प्रकार के क्षार शरीर में बढने से भी बिमारी आती है।

डोकटर या फिर आप जैसे ज्ञानी लोग दवाई खाकर भी ठीक नही होते और प्रतिदिन बिमारी बढती है!! बिमारी ठीक क्यों नही होती? क्योंकि, हामारा शरीर बना है १२ क्षार से और आधुनिक कृषी से मिलते है सिर्फ ३ (N.P.K.) और वहभी झहरीले, जबकी जैविक कृषी से मिलते है १२ क्षार और वह भी १०० प्रतीसद शुध्ध. इसलिए, अगर हम जैविक कृषी करे या फिर उसी के द्वारा की उपज को खरीदे तो ही हमें बिमारी नही होगी या बिल्कुल कम होगी।

पशु धन है, गाय हमारी माता है, अैसी बाते हजारों वर्षो से हम सुनते आये है और यह सारी बातें सच भी है, क्योंकि गाय से हमें दूध मिलता है, खेती के लिए खाद के स्वरूप गोबर मिलता है, फसल रक्षा के लिए गौमुत्र मिलता है और ट्रान्सर्पोट के लिए बैल मिलते है। जब इतने सारे फायदे मिल रहे हों, तो फिर अैसा क्या कारण है कि, लोग पशु को घरमें रखने के बजाय कसाई को बेच रहे है? **गोरोने कोनसी ऐसी योजना बनाई जिस कारण देश आजभी लूटा जा रहा है?** देश को फिरसे कृषी प्रधान बनाने के लिए पशुधन घर घर में होना जरुरी है ओर बिना कोईभी खर्च हम उसे रख शकते हैं। पशु को घर में रखने का आसन तरीका मेरी लिखी किताब में पढे। १९६० से हम वह जैविक कृषी कर रहे हैं और वह कृषी करने के सारे ठोस सबुत हमारे पास है। धनवानों को मेरी विनंती है हम खाली हाथ आऐ हैं और खाली हाथ जाना है, इसलिए जिवन में कुच्छ अैसा कर के जाऐ की दुनिया आपको याद रखें, आप और सरकार साथ दे तो हम जैविक कृषी की प्रथम विध्याल बांधने के लिए हमारी जमीन देश के लिए देने को तैयार है और हमे मिली सारी जानकारी देकर सेवा करने को भी तैयार है।